म० गोर्की
नन्हा-मुन्ना गौरा

म० गोर्की

नन्हा-मुन्ना गौरा

चित्रकार:
ये० चारुशिन

अनुवादक:
योगेन्द्र नागपाल

प्रगति प्रकाशन
मास्को

गौरे-गौरैयों के बारे में भी वही सच होता है, जो लोगों के बारे में। बड़े-बूढ़े गौरे-गौरैया तो बहुत नीरस होते हैं और बस किताबी बातें ही करते हैं। परंतु नन्हे-मुन्ने गौरे-गौरैया वही कुछ करते हैं, जो उनकी अक़्ल मानती है।

एक था पीली चोंच वाला नन्हा-मुन्ना गौरा। उसका नाम था पूदिक। वह हम्माम की खिड़की के ऊपर नरम-नरम घास, फूस और दूसरी नरम चीज़ों से बने गरम-गरम घोंसले में रहता था। उसे अभी उड़ना तो नहीं आता था, पर हां वह पंख ज़रूर फड़फड़ाने लगा था। गौरा हर समय घोंसले में से बाहर झांकता रहता था। वह जल्दी से जल्दी जानना चाहता था कि वह दुनिया कैसी है, उसके रहने के लायक़ है या नहीं।

"चीं, च्या, च्या?" मां गौरैया उससे पूछती।

और वह पंखों को फड़फड़ा कर ज़मीन की ओर देखते हुए कहता:

"चीं, चीं! ज़मीन काली! बहुत काली!"

पापा गौरा पूदिक के लिए कीड़े-मकोड़े लाता और शेखी मारता:

"चीं, मैं च्छा, मैं च्छा?"

मां गौरैया उसकी बड़ाई करती:

"च्छा, च्छा!"

पूदिक कीड़े-मकोड़े निगलते हुए मन ही मन सोचता:

"क्या च्छा-च्छा करते हैं? ज़रा सा मकोड़ा क्या ला दिया, मानो कोई बड़ा कमाल कर दिखाया।"

और वह फिर से घोंसले से बाहर झांकने लगता, चारों ओर नज़र दौड़ाता। मां बेचारी परेशान होकर कहती:

"चैन से, चैन से, मेरे बच्चे। कहीं नीचे न लुढ़क जाना!"

"च्या चैन से? च्या चैन से?" पूदिक ने पूछा।

"च्या-च्या कुछ नहीं। बस ज़मीन पर गिर जायेगा, बिल्ली झटपट झपट लेगी और हड़प जायेगी!" पापा गौरा ने शिकार के लिये उड़ते-उड़ते समझाया।

पूदिक ऐसे ही जी रहा था और पंख थे कि बढ़ते ही नहीं थे।

एक बार तेज़ हवा चली, तो पूदिक ने पूछा:

"ची, च्या च्या?"

"सर-सर करती हवा का तेज़ झोंका आयेगा और तुझे ज़मीन पर जा गिरायेगा। बिल्ली आयेगी और झटपट तुझे हड़प जायेगी," मां ने समझाया।

पूदिक को यह अच्छा नहीं लगा, उसने कहा:

"ये पेड़ क्यों हिलते हैं? ये न हिलें तो हवा भी न चले..."

मां ने उसे समझाने की कोशिश की कि यह ऐसा नहीं है, पर वह माना ही नहीं। वह हर बात को अपने ही ढंग से समझता था।

हम्माम के पास से एक किसान बाहें झुलाता जा रहा था।

"चीं चीं! बिल्ली उसके पंख चट कर गयी! चीं चीं!" पूदिक चहका। "सिर्फ़ हड्डियां रह गयीं!"

"यह आदमी है, इनके पंख नहीं होते!" मां गौरैया ने समझाया।
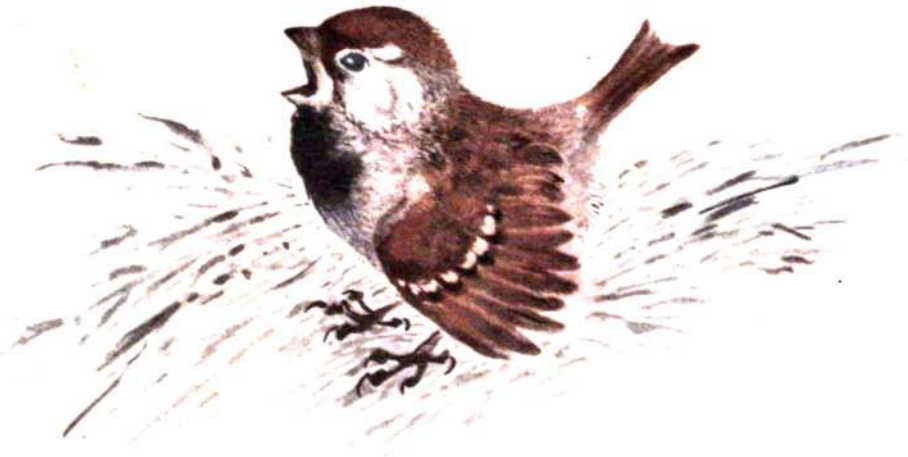
"च्यों च्यों?"

"आदमी बने ही ऐसे हैं। इनके पंख नहीं होते। ये सदा पैरों पर उछल-उछल कर चलते हैं, चमभे?"

"च्यों च्यों?"

"इनके पंख होते तो ये हम सबको पकड़ लेते, जैसे हम कीड़ों को पकड़ते हैं..."

"छोड़ो, छोड़ो, यह बेकार की बात है!" पूदिक चहचहाया। "सबके पास पंख होने चाहिए। चूं, चूं! उड़ना अच्छा, चलना खराब!.. मैं बड़ा होकर सबके पंख लगवा दूंगा, फिर सब उड़ेंगे। चा-चा-चां, चा-चा-चां!"

पूदिक मां की बात नहीं मानता था। उसे अभी तक यह नहीं पता था कि मां की बात न मानने का बुरा नतीजा होता है।

वह घोंसले के बिल्कुल किनारे पर बैठा अपने मन से कविता बना-बना कर पूरे ज़ोर से गा रहा था:

"ओ, बिन पंखों के इन्सान,
तू तो है दो पैरोंवाला,
बेकार तू बेहद बलवान,
पर कीड़ों का बने निवाला!
मैं छोटा, नन्हा कहलाऊं,
लेकिन मैं ख़ुद कीड़े खाऊं।"

ऐसे गाते-गाते ही वह अचानक घोंसले में से नीचे लुढ़क गया। मां गौरैया उसके पीछे-पीछे उड़ी। हरी-हरी आंखों वाली लाल बिल्ली भी झट से पूदिक को हड़पने आ पहुंची।

पूदिक की तो डर के मारे जान ही सूख गयी। उसने अपने नन्हे-नन्हे पंख फैला लिये और भूरे-भूरे पैरों पर डोलते हुए बोला:

"चूं, चूं, चूं! पांय लागूं, बिल्ली मौसी, पांय लागूं! चूं, चूं, चूं..."

मां गौरैया उसे बिल्ली से दूर धकेलने लगी। उसके रोयें फूल गये थे, वह भयंकर और दिलेर हो गयी थी और खोले चोंच बिल्ली की आंखों पर झपट रही थी।

"भाग, भाग यहां से! पूदिक उड़ जा, खिड़की पर उड़ जा..."

डर ने नन्हे गौरे को ज़मीन से ऊपर उठने की ताक़त दी, वह उछला, उसने पंख फड़-फड़ाये और फड़-फड़ करता खिड़की पर पहुंच गया।

इतने में मां भी उसके पास उड़ आयी। बिल्ली ने बेचारी की पूंछ नोंच ली थी, पर फिर भी वह बहुत ख़ुश थी। पूदिक के पास बैठकर मां ने उसके सिर पर चोंच मारी और बोली:

"यह च्या, यह च्या?"

"च्या हुआ!" पूदिक ने जवाब दिया। "एकदम ही तो सब कुछ नहीं आ जाता!"

लाल बिल्ली ज़मीन पर बैठी अपने पंजों में से गौरैया के रोयें निकाल रही थी और हरी-हरी आंखों से उनकी ओर देखती हुई अफ़सोस के साथ म्याऊं-म्याऊं कर रही थी:

"म्याऊं-म्याऊं! कितनी नरम चिड़िया थी, एकदम चूहे जैसी... म्याऊं-म्याऊं!.."
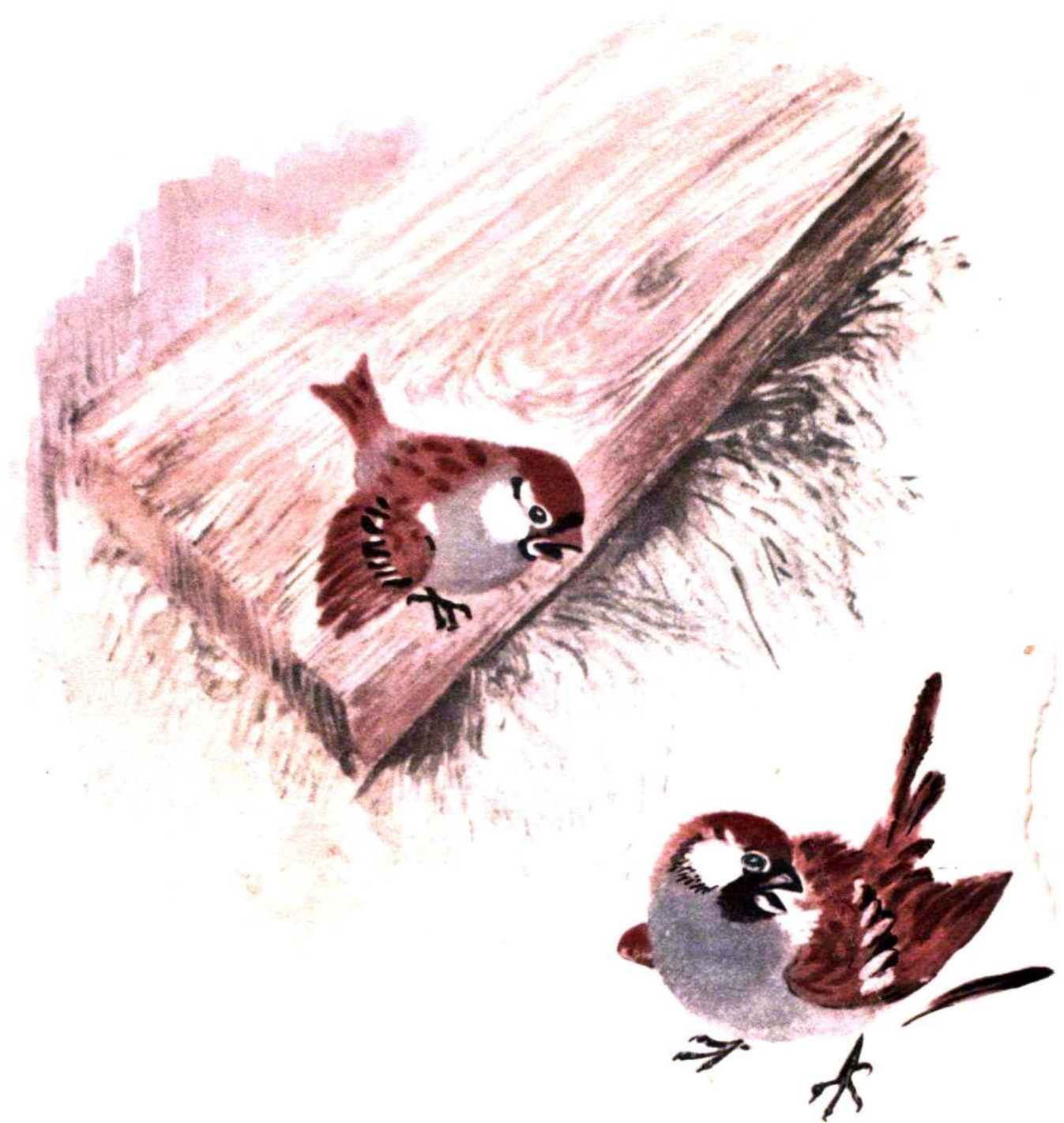
अगर हम यह भूल जायें कि मां गौरैया अपनी पूंछ खो बैठी, तो बाक़ी सब तो ख़ैरियत ही रही।